ૐકાર ફાઉન્ડેશન ટ્રસ્ટ
"માનવસેવા એ જ ઈશ્વરસેવા"
ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट

वर्ष-5 अंक : 58

सहयोग शुल्क : रु. 1 / अक्टूबर : 2021

दिव्यांग सेतु

संपादक :- संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

❝ हर एक दिव्यांग व्यक्ति अपनी सकारात्मक सोच के जरिए विकलांगता को वरदान में बदलने की क्षमता रखता है । ❞

- संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

❝ दिव्यांग वे लोग है, जिनके पास एक ऐसा अंग है या एक से अधिक अंग है जिसमें दिव्यता है। ❞

- संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

निरामय हेल्थ पॉलिसी

पात्रता

- केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही यह पॉलिसी सेरेबल, पाल्सी, ऑटिज्म, मेन्टल रिटार्डेशन, मल्टिपल डिसेबिलिटीसे असरग्रस्त दिव्यांगो को मिल सकती है।
- ४०% अथवा उससे अधिक दिव्यांगता से असरग्रस्त व्यक्ति को इस पॉलिसी का लाभ मिल सकेगा।
- रू. २५०/- बी.पी.एल. एवं रु.५००/- ए.पी.एल. दिव्यांगो के लिए सिंगल प्रीमियम

लाभ

रु. १,००,०००/- तक का इंश्योरेंस मिल सकता है।
(निर्धारित किए हुए फंड के अनुसार)

आवेदन-पत्र के साथ जमा किए जाने वाले प्रमाण-पत्र/दस्तावेज

सिविल सर्फर का दिव्यांगता दर्शाता प्रमाण-पत्र

(ऊपर बताई गई चार बीमारियों में से किसी भी एक का उल्लेख प्रमाण-पत्र में जरुरी है)

- ✓ वर्तमान की पासपोर्ट साइज़ फोटो
- ✓ राशनकार्ड की प्रमाणित कोपी
- ✓ निवास स्थान का प्रमाण (राशनकार्ड अथवा वोटिंग कार्ड)
- ✓ बी.पी.एल. कार्ड (यदि बी.पी.एल. में आते हैं तो)
- ✓ बैंक पासबुक की फोटो कोपी (बैंक IFSC कोड के साथ)

संपादकीय

कभी गिरोगे मगर खुद उठ भी जाओगे,
कभी लडखडाओने मगर खुद ही संभल जाओगे,
जब आप थामोगे बुलंद हौंसलो का दामन तो,
एक दिन आप भी मंजील तक पहुंच जाओगे.

इस विश्व में कंइ सारे ऐसे लोग भी है की जिसे अगर चुनौतीयों का कठिनाइओ का सामना करने की नोबत आए तो वह अपना रास्ता बदल देते है या फीर उससे भागने की कोशिष करते है । सारी सुविधाए उपलब्ध होने के बावजुद भी असफल हो जाते है । वहीं दुसरी ओर कंइ ऐसे इंसान भी है जिन्होंने तमाम कठिनाइओ के बावजुद भी जीवन में असंभव लगनेवाले काम किए है और अपना और देश का भी नाम रोशन कीया है ।

हमे भी ऐसे ही जीवन में चुनौतीयों से भागना नही, अपनी शारिरीक अक्षमता से निराश नही होना है बल्कि जीवन में हंमेशा हर तरह की चुनौतीयों से लडते हुए आगे बढना है ।

“है अगर हौंसला बुलंद तो हर कदम पर सफलता मुमकीन है ”

आप सभी को निवेदन है की “दिव्यांग सेतू” पत्रिका में प्रकाशित करने हेतु आपके आसपास दिव्यांगजनों के अनुलक्ष में हुए कार्यक्रम या कोइ दिव्यांग व्यक्ति की जानकारी का ब्यौरा भी आप हमें भेज सकते है । हम इसे प्रकाशित करेंगे ।

आइए, आप भी दिव्यांगजनों के इस सेवायज्ञ में हमारा साथ है...

दिव्यांग सेतु

मासिक पत्रिका

अक्टूबर - 2021, पृष्ठ संख्या - 16
वर्ष - 5 अंक - 58

प्रेरणास्त्रोत और संपादक

संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

सह-संपादक

मिहिरभाई शाह

मो. 97241 81999

संपर्क-सूत्र

सेवा समर्पण फाउण्डेशन

ॐकार फाउण्डेशन ट्रस्ट (NGO)

Trust Reg. No. : E/20646/Ahmedabad

०१, ग्राउण्ड फ्लोर, आंगी एपार्टमेन्ट,

अन्नपूर्णा पार्टी प्लाट के सामने,

नया विकासगृह रोड, पालडी,

अहमदाबाद - ३८०००९

(मो.) 99749 55365, 9974955125

मुद्रक

प्रिन्ट विज़न प्रा. लि.

आंबावाडी बाज़ार, अहमदाबाद-6

Phone : 079 26405200

वोइस टू दिव्यांग

पैरालिंपिक खेलों में विजेता रहने वाले सभी खिलाड़ियों को दिव्यांग सेतु पत्रिका की और से ढेर सारी शुभकामनाएं

Tokyo Paralympics में छाए नोएडा के डीएम सुहास एलवाई, पत्नी ने बताया उनकी सफलता का सीक्रेट

भारत के बैडमिंटन खिलाड़ी और नोएडा के डीएम सुहास यथिराज टोक्यो पैरालंपिक में सिल्वर मेडल जीतकर दुनियाभर में भारत का नाम रोशन कर दिया है । इन खेलों में भारत की पदक संख्या 19 पर पहुंच गई है । सुहार उत्तर प्रदेश कैडर के 2007 बैच के भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) के अधिकारी हैं ।

38 वर्षीय सुहास पुरुष एकल एसएल 4 क्लास बैडमिंटन स्पर्धा के फाइनल में फ्रांस के लुकास माजूर से करीबी मुकाबले में हार गए जिससे उन्हें सिल्वर मेडल से संतोष करना पड़ा । सुहास को दो बार के वर्ल्ड चैम्पियन माजूर से 62 मिनट तक चले फाइनल में 21-15 17-21 15-21 से पराजय का सामना करना पड़ा । एसएल 4 क्लास में वो बैडमिंटन खिलाड़ी हिस्सा लेते हैं जिनके पैर में विकार हो और वे खड़े होकर खेलते हैं ।

टोक्यो पैरालंपिक में सुहास एल.वाई. (Suhas LY) के प्रदर्शन पर उनके परिवार ने बहुत खुशी जताई है । पति की कामयाबी से खुश ऋतु सुहास ने कहा कि देश के लिए पैरालंपिक में खेलना सुहास का सपना था । इस सपने को पूरा करने के लिए उन्होंने अपनी जिंदगी के कीमती 6 साल समर्पित कर दिए । जब वे पैरालंपिक में जा रहे थे तो मैंने उन्हें यही कहा था कि नतीजे की चिंता किए बिना वे बस अपना बेस्ट गेम खेलें और उन्होंने वही किया । यह मेडल सुहास की पिछले छह साल की मेहनत का फल है । हमारे लिए वो जीत चुके हैं, उन्होंने बहुत अच्छा खेला और देश का नाम रोशन किया है । हमें उन पर गर्व है । ये पूरे देशवासियों के लिए हर्ष का विषय है ।

रितु ने कहा कि उनके सुहास अपनी मंजिल पर पहुंचने के लिए कड़ी मेहनत करने पर यकीन रखते हैं । सरकारी सर्विस में होने के बावजूद वे गेम खेलने के लिए टाइम निकाल ही लेते हैं ।

उन्होंने खेलों को आगे बढ़ाने के लिए हमेशा प्राथमिकता दी है । उसी की वजह से वे आज इस मुकाम पर हैं । रितु सुहास भी अपने पति की तरह एक प्रशासनिक अधिकारी हैं । इन दिनों वह गाजियाबाद में एडीएम एडमिनिस्ट्रेशन के पद पर तैनात हैं ।

टोक्यो पैरालंपिक में सुहास के सिल्वर मेडल जीतने पर उनकी मां जयाश्री ने कहा कि मुझे अपने बेटे पर गर्व है, उन्होंने महान सफलता पाई है । मैंने उनके मैच का आनंद लिया । वह बचपन से खेल में सक्रिय थे और पढ़ाई में भी शानदार थे । भारत को उन पर गर्व है ।

टोक्यो पैरालम्पिक में जयपुर के कृष्णा नागर ने जीता गोल्ड

टोक्यो पैरालंपिक में जयपुर के बैडमिंटन खिलाड़ी कृष्णा नागर ने दुनियाभर में भारत का नाम रोशन कर दिया है । एक्स SH-6 कैटेगरी में हुए रोमांचक मुकाबले में कृष्णा ने हॉन्ग कोंग के चू मान केई को करारी शिकस्त देकर गोल्ड मेडल जीत लिया है । कृष्णा राजस्थान के दूसरे खिलाड़ी है, जिन्होंने ओलंपिक में गोल्ड मेडल जीता है ।

इससे पहले कृष्णा नागर ने शनिवार को ग्रेट ब्रिटेन के क्रिस्टन कूंब्स को हराकर फाइनल में जगह बनाई थी । कृष्णा पैरालिंपिक में मेडल लाने वाले राजस्थान से चौथे खिलाड़ी बन गए हैं । कृष्णा ने अपने खेल से ब्रिटेन के खिलाड़ी को काफी परेशान किया । उन्होंने पहला गेम 21-10 और दूसरा गेम 21-11 से जीतकर फाइनल में जगह बनाई ।

क्या होता है SH-6 कैटेगरी

SH-6 कैटेगरी में वह खिलाड़ी हिस्सा लेते हैं, जिकी लंबाई नहीं बढ़ती । कृष्णा की भी लंबाई नहीं बढ़ रही थी । 2 साल की उम्र कृष्णा की रही होगी, तभी उसकी इस बीमारी के बारे में परिवार को पता चला । धीरे-धीरे कृष्ण बड़ा हुआ । उसने खुद को पूरी तरह खेल को समर्पित कर दिया । वह रोज धर से 13 किमी दूर स्टेडियम जाकर ट्रेनिंग किया करता था ।

धर पर खुशी का माहौल

कृष्णा के फाइनल में पहुंचने पर जयपुर के दुर्गापुरा में उनके परिवार में खुशी का माहौल छा गया था । कृष्णा के परिजनों ने बताया कि लंबे वक्त से कृष्णा हर दिन पैरालिंपिक के लिए मेहनत कर रहा था । उसी का नतीजा है कि आज उसने मैडल जीता है । हमें पूरी उम्मीद है कि कृष्णा भविष्य में भी अच्छा परफोर्म कर भारत का नाम दुनिया में रोशन करेगा ।

Disabled : प्रमोद भगत ने जीता गोल्ड, PM मोदी ने दी बधाई

इस साल पैरालिंपिक में पहली बार खेले जा रहे बैडमिंटन में प्रमोद भगत ने गोल्ड मेडल जीतकर इतिहास रच दिया। ब्रिटेन के डेनियल बेथेल को उन्होंने फाइनल में एकतरफा अंदाज में हराया। 21-14 से पहला गेम जीतने के बाद दूसरे गेम में ब्रिटिश शटलर ने वापसी की, लेकिन 4-11से पिछड़ने के बाद प्रमोद ने पलटवार किया और 21-17 से मैच अपने नाम कर लिया। यह भारत का टोक्यो पैरालिंपिक खेलों में दिन का दूसरा और कुल चौथा गोल्ड था।

दुनिया के नंबर एक खिलाड़ी और एशियाई चैंपियन 33 वर्षीय प्रमोद भगत ने एसएल 3 क्लास में जापान के दाइसुके फुजीहारा को 36 मिनिट में 21-11, 21-16 से हराकर फाइनल में जगह बनाई थी। पांच वर्ष की उम्र में पोलियो के कारण उनका बायां पैर विकृत हो गया था। प्रमोद ने विश्व चैंपियनशिप में चार गोल्ड समेत 4 5 अंतरराष्ट्रीय पदक जीते हैं। बीडब्ल्यूएफ विश्व चैंपियनशिप में पिछले आठ साल में उन्होंने दो स्वर्ण और एक रजत जीते। 2018 पैरा एशियाई खेलों में उन्होंने एक रजत और एक कांस्य जीता।

पीएम मोदी ने भी दी बधाई

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने प्रमोद भगत की उस उपलब्धि पर तुरंत टवीट कर बधाई दी। पीएम ने प्रमोद को चैंपियन बताया साथ ही कहा कि उन्होंने गोल्ड मेडल नहीं बल्कि पूरे राष्ट्र का दिल भी जीता है। इससे पहले आज सुबह निशानेबाज मनीष नरवाल ने पैरालिंपिक रेकोर्ड के साथ भारत की झोली में तीसरा स्वर्ण पदक डाला था जबकि सिंहराज अडाना ने रजत पदक जीता।

TOKYO PARALYMPICS : अवनि लखेरा ने गोल्ड के बाद जीता ब्रोंज मेडल, बनी 'दो पदक' जीतने वाली पहली खिलाडी

भारत की अवनी लखेरा ने टोक्यो पैरालंपिक में एक और कारनामा किया है। मौजूदा पैरालिंपिक में पहले ही स्वर्ण पदक जीत चुके जयपुर के पैरा शूटर ने एक और पदक पर कब्जा कर लिया है। उन्होंने महिलाओं की 50 मीटर राइफल थ्री पोजीशन एसएच 1 स्पर्धा में कांस्य पदक जीता। वह 445.9 के स्कोर के साथ फाइनल में तीसरे स्थान पर रही। इन खेलों में पदकों की संख्या 12 पहुंच गई है।

टोक्यो पैरालंपिक में स्वर्ण पदक जीतने तक का उनका सफर अवसाद से निकलकर संघर्ष करने और द्रढ़ संकल्प से आगे बढ़ने की सफल कहानी बन गया है। यह सफलता की ऐसी कहानी है जिसमें उनके पिता के पास अपनी खुशी बयान करने के लिए शब्द तक कम पड़ गए हैं। अवनि ने टोक्यो पैरालंपिक में महिलाओं की आर-2 10 मीटर एयर राइफल स्टैंडिंग एसएच 1 में पहला स्थान हासिल करके स्वर्ण पदक जीता। जयपुर की यह 19 वर्षीय निशानेबाज पैरालंपिक में स्वर्ण पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला खिलाड़ी बन गई हैं।

पीएम नरेन्द्र मोदी ने अवनी को जीत की बधाई दी है । उन्होंने टवीट किया, 'टोक्यो पैरालिंपिक में और गौरव ! अवनि लखेरा के शानदार प्रदर्शन से उत्साहित । उन्हें कांस्य पदक के लिए बधाई । उन्हें उनके भविष्य के प्रयासों के लिए शुभकामनाएं ।'

अवनि के पिता प्रवीण लेखरा ने बेटी की सफलता पर कहा कि उनके पास अपनी खुशी व्यक्त करने के लिए शब्द नहीं हैं । प्रवीण यहां राजकीय सेवा में हैं । अवनि 20 फरवरी 2012 को एक कार दुर्घटना की शिकार हो गई थीं, जब वह केवल 11 साल की थीं ।इस दुर्घटना में रीढ़ की हड्डी को गहरी चोट लगी और उनके कमर के नीचे के शरीर को लकवा मार गया । उसके बाद से वह व्हीलचेयर के सहारे हैं । प्रवीण लेखरा ने कहा, 'दुर्घटना से पहले वह बहुत सक्रिय थी और हर गतिविधि में भाग लेती थी लेकिन दुर्घटना ने उसकी जिंदगी बदल दी । वह अपनी हालत पर गुस्से में थी और शायद ही किसी से बात करना चाहती थी । बदलाव के लिए, मैं उसे जयपुर के जगतपुरा में जेडीए शूटिंग रेंज में ले गया, जहां उसमें शुटिंग में रुचि पैदा हुई' ।

जैवलिन थ्रो में भारत के सुमित ने जीता गोल्ड मेडल

सुमित ने पहले प्रयास में 66.95 मीटर के साथ फाइनल की शुरुआत की लेकिन उन्होंने अपने पांचवें प्रयास में 68.55 मीटर का थ्रो किया और पहले स्थान पर रहे ।

टोक्यो - भारत के सुमित अंतिल ने जापान के शहर टोक्यो में चल रहे पैरालंपिक में शानदार प्रदर्शन करते हुए भाला फेंक क्लास एफ 64 वर्ग में स्वर्ण पदक अपने नाम कर लिया है । सुमित ने फाइनल में विश्व रिकोर्ड बनाते हुए 68.55 मीटर का थ्रो किया और स्वर्ण पदक जीता । भारत का इस पैरालंपिक में यह दूसरा स्वर्ण पदक है जबकि उसने कुल सात पदक अपने नाम किए है ।

ऐसे रहा मुकाबला -

सुमित ने पहले प्रयास में 66.95 मीटर के साथ फाइनल की शुरुआत की लेकिन उन्होंने अपने पांचवें प्रयास में 68.55 मीटर का थ्रो किया और पहले स्थान पर रहे । सुमित ने दूसरे प्रयास में 68.08, तीसरे में 65.27, चौथे में 66.71 मीटर का थ्रो किया ।

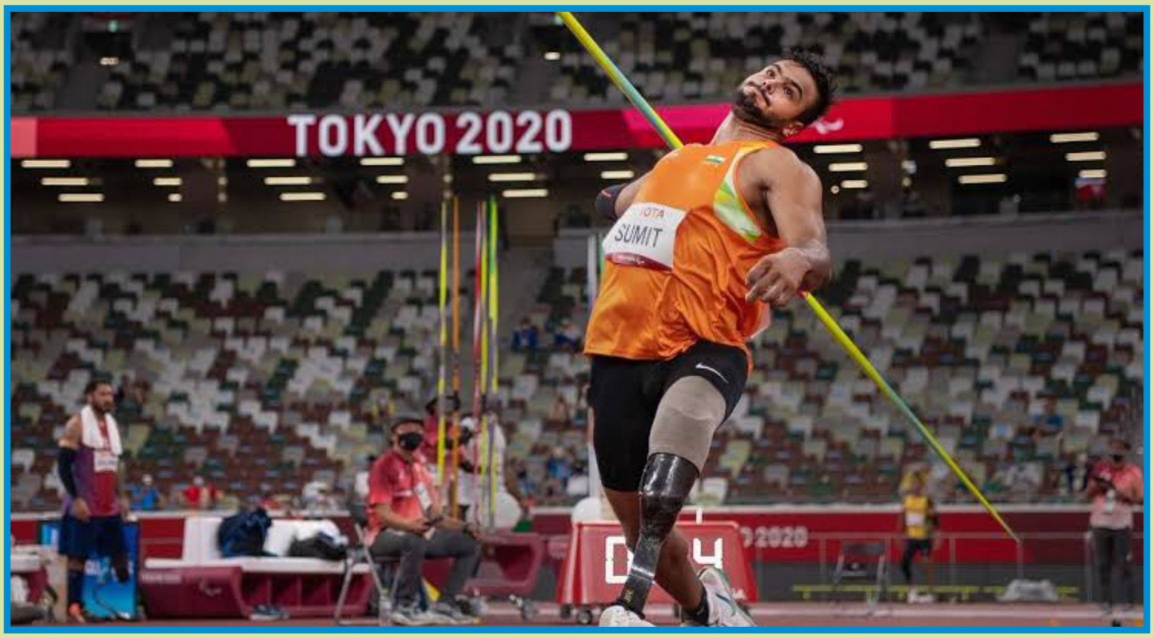

स्वर्ण जीतने वाले मनीष नरवाल ने 2016 में किया खेलों का रुख, फिर कभी नहीं देखा पीछे

मनीष ने 2016 में खेलों की ओर रुख किया। मनीष नरवाल ने इससे पूर्व पैराएशियन गेम्स में गोल्ड जीता था। उनकी इस जीत के बाद पैरालंपिक में भारत ने कुल दो गोल्ड मेडल जीत लिए हैं।

टोक्यो पैरालंपिक में भारत के लिए फरीदाबाद के मनीष नरवाल ने पुरुषों की 50 मीटर एयर पिस्टल स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीतकर इतिहास रच दिया।

मनीष नरवाल मूलरुप से सोनीपत के हैं, जो कई वर्षो से फरीदाबाद में रह रहे हैं और अब यही उनका स्थाई निवास है।

मनीष ने 2016 में खेलों की और रुख किया। मनीष नरवाल ने इससे पूर्व पैराएशियन गेम्स में गोल्ड जीता था। इसके बाद से ही उनसे खेल प्रेमियों की उम्मीदें काफी बढ़ गईं थीं। आज पदक जीतकर उन उम्मीदों को पूरा कर दिया है।

मनीष की जीत से उनके माता-पिता काफी खुश हैं। उनके पिता दिलबाग नरवाल ने बताया कि यह देश के लिए गौरव की बात है। उसके दाहिने हाथ में समस्या थी तो उसने डेढ़ साल तक बाएं हाथ से अभ्यास किया और नेशनल के लिए उसका चयन हो गया। मैं आशा करता हूं कि मनीष मेडल जीतता रहे।

अपने बेटे की जीत की खुशी में फूली नहीं समा रहीं मनीष की मां संतोष ने कहा कि वह बेहद खुश हैं। हमें अपने बेटे पर नाज है। उसे छोटी उम्र से ही खेलों का शौक था। हमने कभी उसे दिव्यांग की तरह नहीं देखा क्योंकि वह सामान्य व्यक्ति की तरह ही हमेशा मेहनत करता था। मनीष की जीत के बाद पूरे परिवार ने ढोल नगाड़ों की थाप पर नाच-गाकर खुशी मनाई।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदीने दी ढेर सारी शुभकामनाएं

स्वर्ण पदक जीतने वाले मनीष नरवाल को प्रधानमंत्री ने बधाई देते हुए टवीट कर लिखा, टोक्यो पैरालंपिक में भारत का गौरवशाली प्रदर्शन जारी है, युवा और प्रतिभावान मनीष नरवाल की शानदार उपलब्धि, मनीष का गोल्ड मेडल जीतना भारतीय खेलों के लिए विशेष क्षण है, उन्हें बधाई। आने वाले भविष्य के लिए ढेर सारी शुभकामनाएं।

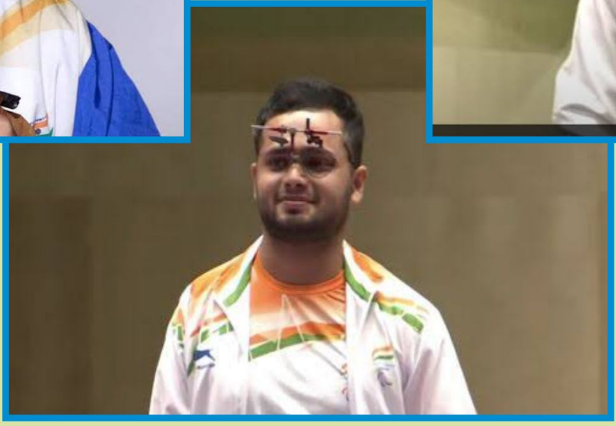

वोइस टू दिव्यांग

Medal : दिव्यांग भाविना पटेल ने पक्का किया देश के लिए मेडल

टोक्यो पैरालिंपिक से भारत के लिए 27 अगस्त को विशेष दिन रहा । भाविना पटेल ने महिला टेबल टेनिस सिंगल्स क्लास 4 के सेमीफाइनल में पहुंचने के साथ ही देश के लिए पदक सुनिश्चित कर लिया । अहमदाबाद की 34 वर्षीय भाविना ने 2016 रियो पैरालिंपिक की गोल्ड मेडल विजेता सर्बिया की बोरिसलावा पेरिच रांकोविच को सीध गेमों में 3-0 से हराकर सेमीफाइनल में प्रवेश किया ।

भाविना ने इस टूर्नामेंट में शानदार खेल दिखाया है । उन्होंने ग्रुप स्टेज के टूसरे मैच में वर्ल्ड नंबर की खिलाडी को मात दी । इसके बाद राउंड ओफ 16 में उन्होंने वर्ल्ड नंबर आठ को मात दी और और कवार्टर फाइनल में वर्ल्ड नंबर दो हराया ।

भाविना ने शौक के तौर पर टेबल टेनिस खेलना शुरु किया । साल 2021 में पीटीटी थाईलैंड टेबल टेनिस चैंपियनशिप जीतकर वह वर्ल्ड रैंकिंग में दूसरे स्थान पर पहुंच गई थी । इसके दो साल बाद उन्होंने एशियन टेनिस चैंपियनशिप भी जीती । उन्हें कोच ललन दोषी के अलावा टीम के ओफिशियल तेजलबेन लाखिया भी मैच के दौरान गाइड करते हैं ।

अहमदाबाद में अंधे लोगों के लिए बनाया गया एक संगठन उन्हें आर्थिक तौर पर मदद करता था । इसके बाद पिछले साल उन्हें टोप्स में शामिल किया गया था जिससे उन्हें पहली बार टोक्यो पैरालिंपिक में खेलने का मौका मिला और उन्होंने इतिहास रच दिया ।

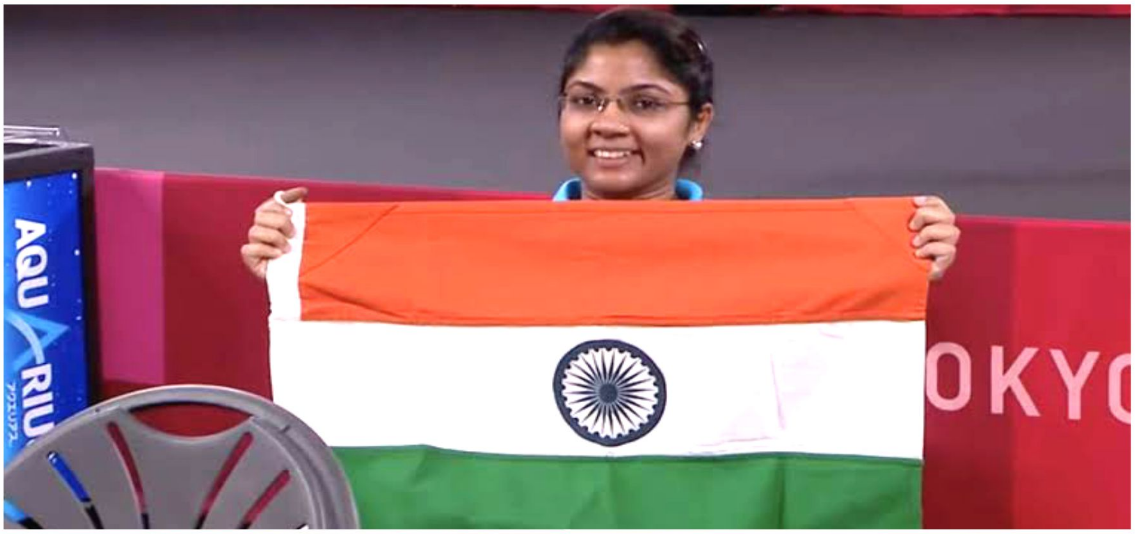

पैरालिंपिक खेलों में भारत का कमाल - ऊंची कूद में निषाद कुमार की चांदी

निषाद ने 3 साल पहले शुरु किया खेलना

जापान की राजधानी में जारी पैरालिंपिक खेलों में आज भारत की 'चांदी' हो गई । टेबल टेनिस में भाविनाबेन के बाद एथलेटिक्स में निषाद कुमार ने भी सिल्वर मेडल जीत लिया । ऊंची कूद T47 event में भाग लेने वाले निषाद ने 2.06 मीटर के साथ रजत पदक अपने नाम किया ।

साल 2019 में खेलों में डेब्यू करने वाले निषाद की जितनी तारीफ की जाए उतनी कम है । पैरालिपिंक सिल्वर मेडल जीतते हुए उन्होंने एशियन रेकोर्ड की बराबरी भी कर दी । यह निषाद कुमार का व्यक्तिगत बेस्ट प्रदर्शन है । भारत के एक अन्य एथलीट राम पाल का खेल भी सराहनीय रहा । 1.94 मीटर की जंप के साथ वह पांचवें पोजिशन पर रहे, उनका भी यह करियर बेस्ट परफोर्मेंस है ।

गोल्ड जीतकर कटाया था पैरालिंपिक का टिकट

निषाद कुमार ने 2019 में दुबई में वर्ल्ड पैरा एथलेटिक्स ग्रांड फ्री में 2.05 मीटर हाई जंप लगाकर गोल्ड मेडल जीता था । इसी के साथ उन्होंने टोक्यो पैरालिंपिक का टिकट भी हासिल किया था । फरवरी 2021 में वह साई बेंगलुरु कोम्पलेक्स में कैंप के दौरान कोरोना वायरस की चपेट में आ गए थे । उन्होंने न केवल महामारी को मात दी, बल्कि टोक्यो की तैयारी में कोई कसर नहीं छोडी ।

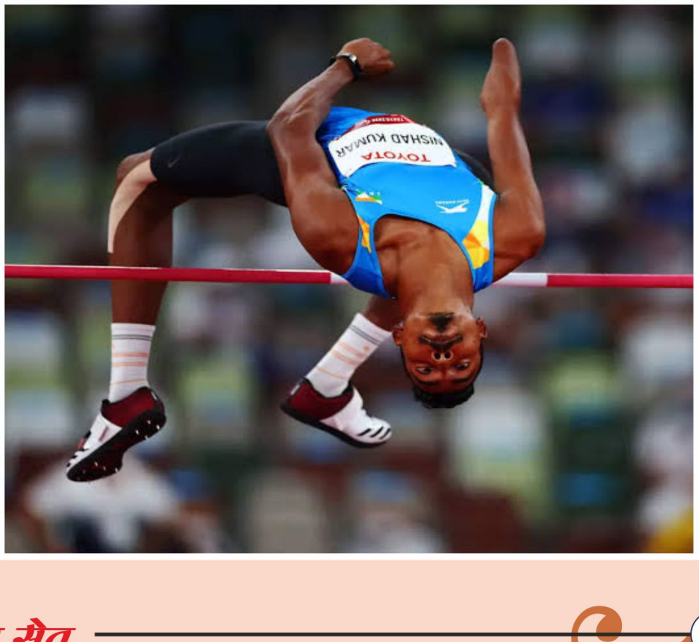

टोक्यो पैरालंपिक - देवेन्द्र झाझरिया ने भाला फेंक में हासिल किया सिल्वर, सुंदर सिंह को मिला ब्रोन्ज

टोक्यो पैरालंपिक में देवेन्द्र झाझरिया ने सिल्वर और सुंदर सिंह ने भाला फेंक F45 कैटेगिरी में कांस्य पदक जीता

भारत के देवेन्द्र झाझरिया और सुंदर सिंह गुर्जर ने टोक्यो पैरालंपिक में शानदार प्रदर्शन करते हुए भाला फेंक एफ-46 वर्ग में क्रमशः रजत और कांस्य पदक अपने नाम किया।

टोक्यो पैरालंपिक में सिल्वर जीतने वाले देवेन्द्र झाझरिया ने अपने पिता को पदक समर्पित किया। उन्होंने कहा कि पिता की वजह से ही मैं यहां तक पहुंचा हूं। मेरे पिता ने मुझे कड़ी मेहनत करने और एक और पदक जीतने के लिए प्रेरित किया। मुझे खुशी है कि आज मैंने उनका सपना पूरा कर दिया। उन्होंने आगे कहा कि उनके प्रयासों ने ही मुझे यहां तक पहुंचाया है। बता दें कि दो बार के स्वर्ण पदक विजेता देवेन्द्र झाझरिया ने सोमवार को एफ46 वर्ग में 64.35 मीटर भाला फेंककर टोक्यो में सिल्वर मेडल जीता। एथेंस (2004) और रियो (2016) में स्वर्ग पदक जीतने वाले 40 वर्षीय झाझरिया ने इस दौरान अपना पिछला रिकोर्ड भी तोड़ा। झाझरिया के पहले 63.97 मीटर के साथ विश्व रिकोर्ड दर्ज था। बता दें कि झाझरिया ने आठ साल की उम्र में करंट लगने की वजह से अपना बायां हाथ गंवा दिया था।

अपने हौसले की एक और दास्तान दर्ज करवाई

झाझरिया ने टवीट कर कहा, आज टोक्यो पैरालंपिक में रजत पदक जीतकर पैरालंपिक के इतिहास में एक बार फिर से अपने हौसले की एक और दास्तान दर्ज करवाई। ओलंपिक और पैरालंपिक में तीन व्यक्तिगत पदक प्राप्त कर इतिहास के स्वर्णिम पन्नों पर अपना नाम दर्ज करवाया, आप सभी देशवासियों का बहुत बहुत आभार।

सिंहराज को कांस्य, भारत को पैरालिंपिक निशानेबाजी में मिला दूसरा पदक

टोक्यो पैरालिंपिक में सिहराज अडाना ने पी 1 पुरुष 10 मीटर एयर पिस्टल एसएच 1 में जीता ब्रान्ज मेडल। शूटिंग में इन खेलों में यह भारत का दूसरा मेडल है।

भारतीय निशानेबाज सिंहराज अडाना ने पैरालिंपिक खेलों में मंगलवार को यहां पी 1 पुरुष 10 मीटर एयर पिस्टल एसएच 1 स्पर्धा में कांस्य पदक जीता जो इन खेलों की निशानेबाजी प्रतियोगिता में देश का दूसरा पदक है। पोलियों से ग्रस्त होने वाले और पहली बार पैरालंपिक में भाग ले रहे 39 वर्षीय सिंहराज ने कुल 216.8 अंक बनाकर तीसरा स्थान हासिल किया। उन्होंने छठे स्थान पर रहकर आठ निशानेबाजों के फाइनल में जगह बनाई थी।

सिंहराज शीर्ष तीन में जगह बनाने के लिए शुरु से ही संघर्षरत थे। उनका 19 वां शॉट सही नहीं लगा जिससे वह पिछड़ गए थे लेकिन उनका 20 वां प्रयास अच्छा रहा जबकि इसमें चीन के झियालोंग लोउ 8.6 अंक ही बना पाए।

चैंपियन चाओ यांग (237.9 पैरालंपिक रिकार्ड) ने स्वर्ण और हुआंग झिंग (237.5) ने रजत पदक जीता। सिंहराज 9.1 के स्कोर से चौथे स्थान पर खिसक गये थे लेकिन चीनी निशानेबाज के खराब प्रदर्शन से वह फिर से तीसरे स्थान पर आ गए। हरियाणा के बहादुरगढ़ के रहने वाले सिंहराज केवल चार साल पहले इस खेल से जुड़े। वह फरीदाबाद के सैनिक स्कूल के चेयरमैन भी रह चुके हैं।

उनके दादाजी देश के स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े रहे तथा दूसरे विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटिश भारतीय सेना में कार्यरत थे।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदीने दी बधाई

रजत पदक जीतने वाले सिंहराज अडाना को बधाई देते हुए पीएम मोदी ने कहा, उत्कृष्ट प्रदर्शन सिंहराज इसे फिर से करने में सफल रहे, उन्होंने इस बार मिक्स्ड 50 मीटर पिस्टल एसएच 1 स्पर्धा में एक और पदक जीता, उनके इस करिश्मे से भारत खुश है, सिंहराज को बधाई। उन्हें भविष्य के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर